[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3569

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

संप्रेषण में रंगों की अठखेलियां

डॉ. रेखा श्रीवास्तव
सहायक प्राध्यापक चित्रकला
शास.महारानी लक्ष्मी बाई कन्या स्ना. महा., भोपाल

व्यक्ति की अभिव्यक्ति बचपन से लेकर जवानी फिर अधेड़ अवस्था तक के सफर में, विभिन्न रूप लेती है। इस यात्रा में बहुत सारे तत्व अपने विकास के दौरान घुसपैठ करते हैं और यह एक तरह का आभार है। जो सिर्फ मनुष्य के जीवन में ही नहीं घटता बल्कि कलाकार की अभिव्यक्ति में भी लक्षित होता है। जहां हर व्यक्ति अपनी विचार धाराओं के अनुरूप खुद को खोजता, व्यक्त करता है। खुद के मापदण्डों के अनुसार अपनी मूल्य दृष्टि विकसित करता है। परन्तु इस अवस्था तक पहुचने के लिये , व्यक्ति को लगातार अतिष्य का त्याग और हर रूप में मौजूदा वक्त में जीना होता है। एक चित्रकार के लिये कैनवास के तात्विक संयोजन पर खुद को केन्द्रित करना सबसे जरूरी है, यह रास्ता उसे ले जाएगा, जहां बारीकियों से परे वो पूर्णता का स्वत्व निकालकर सफेद कैनवास पर रख देता है।[प]

कोई भी कलाकार अपनी कृतियों में मूल मानवीय अनुभवों को जैसे विकास, प्रेम, शत्रुता, वैषम्य, शान्ति, रात्रि, दिन, सुख, दुख, प्रसन्नता आदि के अनुभवों को, उन्हें व्यक्त करने वाली विभिन्न मनोंदशाओं, विविध वातावरणों का सृजन करने के लिये रंगों, रेखाओं विभिन्न रूपाकारों का प्रयोग करता है। जिसकी अनुभूति हमें आंख खुलते ही होने लगती है। प्रातःकाल आंख खुलते ही हम प्रकृति के सानिध्य में आ जाते हैं। सूरज की लालिमा हो या वृक्षों की हरीतिमा, धरा से गगन तक सम्पूर्ण प्रकृति अनगिनत रंगों से परिपूर्ण है। संसार में ऐसी कोई वस्तु नहीं जिसका कोई रंग न हो। यहां तक कि धूप, हवा, और पानी भी अपने नैसर्गिक रंगों से पूर्ण हैं। किसी भी वस्तु को हम उसके रूप के साथ साथ उसके रंग से ही पहचानते हैं। यही रंग मानवीय मन की अभिव्यक्ति का रूचिपूर्ण साधन है। मनुष्य स्वभावतः हर क्षेत्र में रंग खोजा है। उसकी दृष्टि वहीं जाती है जहां रंग होते हैं। रंग सजीवता के प्रतीक होते हैं। निष्प्राण वस्तुएं भी रंगों के कारण सजीव हो उठती हैं। उल्लास, प्रसन्नता, प्रेम, क्रोध, यहां तक कि नींद और सपने भी रंगों से पृथक नहीं होते । वह अपने अनुभवों संवेदनाओं को केवल महसूस ही नहीं करता वरन् उनके संप्रेषण में भी आनंदित होता है। कलाकार के कार्य का यह सामान्य भाग प्रतीत होता है कि वह अपने अनुभव को दूसरे लोगों तक प्रेषित करे। ऐसा करने के लिये उसके पास उन तक संम्प्रेषण के साधन होने चाहिये और ये साधन कुछ शारीरिक या दृष्टव्य वस्तु है, चित्रित केनवास।[पप]रंगों का मानव जीवन में महत्वपूर्ण स्थान होता है। रंगों के प्रति मानव का आकर्षण प्रारंभ से ही रहा है। इसलिये आदिम गुहावासी से लेकर आधुनिक मानव तक ने अपनी सभ्यता के विकास में रंगों का अच्छा खासा सहारा लिये हैं । रंग व्यक्ति के दृष्टिकोण, मनःस्थिति, मनोभावों और व्यवहार को परिवर्तित करने में सक्षम होता है। भावनाओं को प्रभावित करने में रंगों का सर्वाधिक प्रभाव होता है। यहां तक कि निर्णय लेने की क्षमता पर भी रंगों का गहरा प्रभाव होता है। रंगों द्वारा मनुष्य की कार्यक्षमता में क्षय या वृद्धि होती है। विश्व प्रसिद्ध भारतीय चित्रकार रजा कहते हैं कि 'मैनें रंग का व्यवहार इस प्रकार किया है मानों वह हमारे शरीर का जीवन–तत्व हो, रेखाएं मानों हमारी शिराएं। चित्रित सतह मानों शरीर, ज्यामिति मानों ढांचा, शरीर के अन्दरष्की अस्थियां हैं। मुझे लगा कि इसी तरह मै जीवनानुभवों के सार को व्यंजित कर सकता हूं।

चित्रण संसार में आधुनिक काल में रंग के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ जिसका प्रारंभ हम प्रभाव वाद के शुरूवात से मान सकते हैं। जहां प्रभाववादी कलाकारों ने रंगों का वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत कर चित्रों में नवीन प्रयोग किये। उनका मानना था कि आकारों का स्पष्टीकरण व बारीकियों का अंकन कुशलतापूर्वक होते हुए भी कुछ यांत्रिक क्रियाएं है जिनमें वह सर्जनात्मक आनंद नहीं है जो मुक्त तूलिका संचालन व विशुद्ध रंगांकन में है।[पपप]परिणाम स्वरूप कला में रंग रचनात्मक प्रयोगों और मिश्रित माध्यम के नवीन रूपों में मुखरित हुआ। आज कलाकार रंगों के स्वाभाव से नहीं बल्कि अपने मूड के अनुरूप रंग लगाता है। आवेषवश वह लाल रंग नहीं लगाता वरन् हरा या नीला भी लगा देता है। आज कलाकार का उद्देश्य रहस्य की जड़ों तक जाना और उसके अर्थ पाने का निरंतर प्रयास होता है। तभी तो रजा के चित्रों में ' सृष्टि के उस मूल चक्र के अमरत्व की पुर्नप्राप्ति, उसके उच्चरित रूप की लयगति, और उसके अनुशासन का सहज अर्न्तबन्ध इन कलाकृतियों के आवर्ती रूप की बुनियाद है। यह चक्राकार गति संसार की गति का ही एक बिम्ब है जिसमें कृष्ण आकारों का व्याघात है। पर यही काला रंग ग्रीष्म में अपने कुहरिल रूप समंत जीवन की दहलीज बन गया है। काला रंग अपनी रहस्यमयता से खींचता है। इस तरह काला रंग इन केनवासों की गति का अंतिम बिन्दु नहीं वरन् उस पूरे चक्र का रहस्यमय उद्गम स्त्रोत बन जाता है। रंगों के आदिम स्त्रोत तक पहुंचते हुए, तूलिका के हर आघात को उसकी आदिम मुद्रा प्रदान करते हुए रजा के केनवास कला की गहनतम

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

सच्चाइयां उजागर करते हैं। जब हम रजा के चित्रों की बात करते हैं तो उनके चित्रों में जीवनानुभवों का सार रंगों के विभिन्न संयोजनों में दिखाई देता है। वे अपने चित्रों में जीवन के विभिन्न अनुभवों की यथार्थ प्रस्तुति के स्थान पर भावनात्मक और आध्यात्मिक स्तर पर चित्रण को महत्व देते हैं।

सर्वमान्य मान्यता के अनुसार लाल रंग उत्साह व उत्तेजना का रंग है लेकिन चित्रकार रामकुमार के अनुसार लाल रंग उदास भी हो सकता है। हम यह कह सकते हैं कि रंगों का प्रयोग अब कलाकार परम्परा के अनुरूप न कर मौलिक कल्पनाशीलता से करता है। रामकुमार ने रंगों के प्रयोग में सूक्ष्म दृष्टि विकसित की है तभी तो उनके चित्रों में रंगों के अद्भुत प्रयोग से वातावरण के उल्लास, उदासीनता, भावबोध को प्रस्तुत करने की अपूर्व क्षमता स्पष्ट दृष्टिगत होती है।

यही कारण है कि आज की चित्रकला में वृक्ष मेजेन्टा, आकाश लाल, चेहरा हरा, पर्वत बैंगनी या अन्य किसी अजीब रंग के हो जाते हैं। किसी भी कलाकृति में कलाकार की आत्मसंतुष्टि का पूर्ण श्रेय भी रंगों के उचित समायोजन को ही जाता है। रजा रंगों और उसके संयोजनों के प्रयोग बखूबी जानते हैं कि चित्रों में रंगों को कहां तक लगाया जाय कि उनका जादू बना रहे। उनके लाल रंग के चित्र प्रयोग को लम्बे समय तक देखा जा सकता है। चटक लाल रंग चौंधियाने के बजाय हमें आकर्षित करता है। ध्यान से उनके चित्रों को यदि देखें तो यह भी पता लगता है कि दरअसल जिस रंग का जादू बोल रहा है उसी रंग का प्रयोग कम हुआ है। उनके चित्रों के रंगों में जीवन के रहस्यों का उद्घाटन होता है, जंगलों, पेड़ों और हवाओं का शोर होता है, गिरते जल प्रपातों की नीली सफेद लहरे, धूसर पीले रंगों की मिट्टी पर खड़े कच्चे मकानों की सरगम होती है। यहां हम उनके चित्र जिसका शीर्षक राजस्थान है का उल्लेख समीचीन होगा जिसमें तीखे, उजास भरे लाल पीले काले रंगों का निर्माण महज एक प्रदेश की प्रस्तुति नहीं है बल्कि सम्पूर्णता में किया गया काम है, एक लम्बी और जोखिम भरी यात्रा का वृतान्त है, सम्पूर्ण प्रकृति का एक रागात्मक लयात्मक संयोजन है। एक अन्य चित्र सैलाब में नीले, सफेद सलेटी रंगों में एक फूटती हुई रोशनी है यह सैलाब एक रंग का सैलाब है। चटक रंगों में निर्मित यह अद्भुत रचना मनुष्य की आकांक्षा, उसकी गति लय और उसके शारीरिक संवेंगों का मूर्त स्वरूप है।रजा के लिये रंग सिर्फ उपकरण नहीं है, किसी ट्यूब या टिकिया में भरे हुए पिगमेंट मात्र नहीं है, उनकी देह, आत्मा और उनका अपना सोंदर्य है।[पअ]रजा भारतीय चित्रकला का भंडार संजोने में अमृता शेरगिल एवं अन्य उन भारतीय चित्रकारों के समान सर्वोपरि स्थान रखते हैं

सन्दर्भ –

[प]प्रसाद कमला,सम्पादक , कलावार्ता अंक 104 वर्ष 22, पृ. 103 मध्यप्रदेश कला परिषद भोपाल
[पप]कलिंगवुड आर.जी कला के सिद्धांत, पृ. 288, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी जयपुर

[पपप]र.वि.साखलकर, कला के अन्तःदर्शन, पृ155.राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी जयपुर

[पपप]प्रो. कमला प्रसाद सम्पादक, कलावार्ता,पृ. 47 म.प्र. कला परिषद भोपाल